P.G. (Sanskrit) sem. III

CC-X, unit-III

→ अर्थप्रकृतियों का निरूपण (दशरूपक)

By

Dr. Sanjay Kumar Chaubey

(Assistant professor)

Dept. of Sanskrit

M.D. Jain college, Ara

Scanned by CamScanner

अर्थप्रकृतियों का निरूपण —

अर्थप्रकृतियाँ नाटकीय इतिवृत्त के पाँच तत्त्व हैं। सम्पूर्ण कथानक इन्हीं नाटकीय तत्त्वों में विभक्त होता है। अर्थ का अभिप्राय प्रयोजन है और प्रकृति का अर्थ सिद्ध हेतु है। इस प्रकार अर्थप्रकृति का शाब्दिक अर्थ प्रयोजन सिद्धि के उपाय हैं। अर्थप्रकृति पाँच हैं — बीज, बिन्दु, पताका, प्रकरी और कार्य।

बीजबिन्दुपताकाख्यः प्रकरीकार्यलक्षणः ।
अर्थप्रकृतयः पञ्च ता एताः परिकीर्तिताः॥

ये अंश इष्ट लक्ष्य की प्राप्ति के साधन होते हैं। शास्त्रीय भाषा में इनको अर्थप्रकृति अर्थात् लक्ष्य प्राप्ति के साधन कहा जाता है — " यत्रार्थः फलं तस्य प्रकृतोपायाया फलहेतवः इत्यर्थः॥ (अभि.भा), आचार्य धनिक ने भी — " अर्थप्रकृतयः प्रयोजनसिद्धि हेतवः ' कहा है।

(1) बीजः— बीज पञ्च अर्थप्रकृतियों में से एक है और प्रथम है। यह वह अर्थप्रकृति है जिसे रूपक के मुख्य फल का मूल कारण या उपाय कहा जाता है। हम यह कह सकते हैं कि रूपक के आरम्भ में अल्परूप में संकेतित वह तत्त्व जो रूपक के मुख्य फल का कारण है। तथा इतिवृत्त में अनेक रूप में पल्लवित होता है, बीज कहलाता है। रूपक प्रबन्ध का यह बीज धान्य सदृश होता है। यह प्रारम्भ में अत्यन्त सूक्ष्म रूप में उपस्थित रहता है और कथा के उत्तरोत्तर

Scanned by CamScanner

विकास से विकसित और वृद्धशील होता है।—

स्वल्पोद्दिष्टस्तु तद्धेतुर्बीजं विस्तार्यनेकधा।

स्तोकोद्दिष्टः कार्यसाधकः पुरस्तादनेकप्रकारं विस्तारी हेतुविशेषो बीजवद् बीजम्। यथा रत्नावल्यां वत्सराजस्य रत्नावलीप्राप्ति-हेतुरनुकूलदैवो यौगन्धरायणव्यापारो विष्कम्भके न्यस्तः-

यथा रत्नावली नाटिका के इतिवृत्त का कार्य उदयन रत्नावली का मिलन और उदयन को चक्रवर्तित्व प्राप्ति जो मंत्री यौगन्धरायण को अभीष्ट है। अतः नाटिका के विष्कम्भक में ही यौगन्धरायण की यह चेष्टा कि 'जिसे भाग्य की अनुकूलता प्राप्त है। बीज के रूप में सामने रखी गई है। सूत्रधार के द्वारा— "द्वीपादन्यस्मात्—" पढ़ने पर नेपथ्य में यौगन्धरायण साधु-भरतपुत्र! साधु त्वमेतत् कः सन्देहः" कहते हुये उपर्युक्त श्लोक पुनः पढ़ता है। यहाँ से लेकर - 'प्रारम्भोऽस्मि स्वामिनो वृद्धिहेतौ" तक बीज है।

वेणीसंहार नाटक में द्रौपदी का केशसंयमन नाटक का मुख्य लक्ष्य है। इस कार्य का हेतु भीम के क्रोध से परिपुष्ट युधिष्ठिर का उत्साह है। और यही इस 'स्वस्था: भवन्ति मयि जीवति धार्तराष्ट्राः।' उक्ति से लेकर "मन्थायस्तार्णवाम्भः-" तक उपन्यस्त है।

यह बीज भी महाकार्य तथा अवान्तर कार्य का हेतु होने के कारण अनेक प्रकार का होता है।

Scanned by CamScanner

(2) बिन्दु :-

प्रयोजन सिद्धि की पाँच अर्थप्रकृतियों में बिन्दु द्वितीय अर्थप्रकृति है। अवान्तर कथाओं से इतिवृत्त के विच्छिन्न हो जाने पर जो कथावस्तु को जोड़ने व उसे आगे बढ़ाने का कारण होता है उसे बिन्दु कहते हैं:—

'अवान्तरार्थविच्छेदे बिन्दुरच्छेदकारणम्।'

यथा रत्नावली नाटिका में वासवदत्ता के द्वारा कामदेव की पूजा एक अवान्तर वृत्त है। पूजा समाप्त हो जाने पर एक प्रकार से इस कथा का (पूजावृत्त) कार्य समाप्त हो जाता है। और इसके पश्चात् मूलकथा रुक जाती है तथा कथा में विशृङ्खलता आ जाती है। प्रधान इतिवृत्त को जोड़ने और उसके आगे के कार्य को गति देनेवाला वैतालिकों का कथन —
" कथमेव स उदयननरेन्द्रो तातेन दत्ता इत्यादि' अवान्तरकथा प्रसङ्ग को मूल कथा से जोड़ देता है। अतः यह बिन्दु है।

अवान्तर कथा को मूल से जोड़ने वाली कड़ीरूप यह बिन्दु कथा में आगे चलकर ठीक वैसे ही फैल जाती है जैसे तेल की बूँद जल में सर्वत्र फैल जाती है। इसीलिये इस कारण को बिन्दु कहा जाता है। वस्तुतः बिन्दु एक प्रयोजन की सिद्धि के पश्चात् विशृङ्खल होते हुये कथांश को जोड़कर आगे की ओर गतिशील करती है। और नाट्य में ऐसे अवसर प्रायः आते हैं, अतः नाट्य में अनेक बिन्दु होते हैं।

Scanned by CamScanner

(3) पताका :- पताका पञ्च अर्थप्रकृतियों का तृतीय सोपान है। यह प्रासंगिक कथावस्तु से सम्बद्ध है, जो प्रासंगिक कथा काव्य या रूपक में दूर तक व्याप्त हो, उसे पताका कहते हैं —

"सानुबन्धं पताकाख्यम्"

दूरं यदनुवर्तते प्रासंगिकं सा पताका ॥

इस पताका कथावस्तु का नायक अलग से होता है जो आधिकारिक कथावस्तु के नायक का साथी होता है तथा उससे गुणों में कुछ न्यून होता है। उसे पताका नायक कहते हैं यथा - रामायण का सुग्रीव, मालती-माधव का मुकुन्द, शाकुन्तल का विदूषक पताका नायक हैं तथा उसकी कथा पताका कथा है। पताका नायक का कोई निज फल नहीं होता। प्रधान नायक के फल को सिद्ध करने के लिये उसकी सारी चेष्टाएँ होती हैं।

पताका नायक का अपना जो भी फल है उसका उपनिबन्धन गर्भ सन्धि या विमर्श सन्धि में ही हो जाता है। यथा रामकथा के फल रावणवधसीताप्राप्ति के पहले ही सुग्रीव को राज्यप्राप्ति हो जाती है। इस प्रकार मुख्य कथा के नायक का फल तो निर्वहण सन्धि में मिलता है, किन्तु सुग्रीव को राज्यलाभ गर्भ या विमर्श सन्धि में ही हो जाता है।

(4) प्रकरी :- रूपक के मुख्य फल की सिद्धि की साधनभूत पञ्च अर्थप्रकृतियों में से प्रकरी चतुर्थ है। यह भी प्रासंगिक कथावस्तु का एक भेद है। रूपक प्रबन्धों में अल्पदेश व्यापक प्रासंगिक इतिवृत्त प्रकरी है — "प्रकरी च प्रदेशभाक् यदल्पं दूरं नानुवर्तते सा प्रकरी।" प्रकरी कथा के नायक का अपना

Scanned by CamScanner

कोई विशेष फल नहीं होता अर्थात् उसके समस्त कार्य-कलाप अपने प्रयोजन विशेष की सिद्धि के लिये नहीं होते अपितु आधिकारिक कथा के नायक की उद्देश्यविशेष की सिद्धि के लिये होते हैं। यथा- रामचरित से सम्बन्धित रूपकों में शबरी और जटायु को जो मोक्षप्राप्ति है वह उसके प्रयत्नों का फल नहीं अपितु राम के सीता-लाभ रूपी फल का साधन है। इस प्रकार प्रकरी ऐसा इतिवृत्त विशेष है जो स्वार्थ निरपेक्ष रहता है और एकमात्र आधिकारिक इतिवृत्त के लिये इसका नियोजन किया जाता है।

(5) कार्य :- कार्य पञ्चम अर्थप्रकृति है। इसका फल रूपक के मुख्य फल की सिद्धि से है। इस अर्थ प्रकृति को परिभाषित करते हुये धनञ्जय का कथन है कि जो कथानक का प्रधान साध्य है तथा समस्त उपायों का आरम्भ जिसके लिये किया गया है, जिसकी सिद्धि के लिये समस्त नाट्य सामग्रियाँ उपस्थित हैं उसे 'कार्य' कहते हैं।

जो भी आवश्यक साधन समुदाय है वह सब कार्यरूप अर्थप्रकृति के अन्तर्गत रहता है। प्रधान उपाय तो बीज है किन्तु उसका सहायक अन्य जो कुछ भी उपाय है वह सब कार्यरूप है। यथा- रामचरित से सम्बन्धित रूपकों में रावणवध हेतु समस्त नाट्य सामग्रियों की उपस्थिति कार्य नामक अर्थप्रकृति है।

इस प्रकार इन पञ्च अर्थप्रकृतियों के माध्यम से रूपक के त्रिवर्ग रूप रूपक के फल के भी तीन भेद हैं - एकानुबन्धि :- जो शुद्ध होता है, जिसमें त्रिवर्गों में से एक ही प्रमुख होगा और दूसरा गौण।

द्वयनुबन्धि :- जिसमें त्रिवर्गों में से दो की प्रधानता होती है शेष एक गौण होता है। त्र्यनुबन्धि :- इसको धनञ्जय कहते हैं - कार्यं त्रिवर्गस्तच्छुद्धमेका नेकानुबन्धि च" इसमें तीन से अन्वित अर्थात् धर्म, अर्थ, मोक्ष प्रधान होंगे काम गौण होगा।

रूपक का फल है त्रिवर्ग (धर्म, अर्थ और काम) यह फल कभी तो शुद्ध (त्रिवर्ग में से एक) हो सकता है, कभी दो वर्ग एक से अनुगत और कभी तीनों वर्ग दो से अनुगत होते हैं।